Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054, October to December 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LII (52), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

बृहत्त्रयी महाकाव्यों की कथा-वस्तु का अध्ययन

प्रो. वेदप्रकाश मिश्र* डॉ. नरेन्द्र प्रसाद शुक्ला**

* विभागाध्यक्ष (संस्कृत एवं प्राच्य भाषा) डॉ. सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय, करगीरोड, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.) भारत
** विभागाध्यक्ष (संस्कृत) सी. एम. डी. कॉलेज, बिलासपुर (छ.ग.) भारत

शोध सारांश – संस्कृत महाकाव्यों की समृद्ध परंपरा में किरातार्जुनीयम्, 'शिशुपालवाम्'और 'नैषधीयचरितम्' को विशेष स्थान प्राप्त है। ये तीनों महाकाव्य, जिन्हें बृहत्त्रयी के रूप में मान्यता दी गई है, भारतीय संस्कृति के उच्चतम आदर्शों और मूल्यों को प्रतिबिंबित करते हैं। इन महाकाव्यों में न केवल कथा-कला की उत्कृष्टता है, बल्कि इनकी रचना भारतीय समाज के विविध पहलुओं को भी उजागर करती है, जिसमें धर्म, नीति, और नैतिकता की परिपूर्ण अभिव्यक्ति मिलती है। भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण और विशिष्ट पहलू नारी है, जो सदैव से समाज की सांस्कृतिक, धार्मिक, और नैतिक संरचना का अभिन्न अंग रही है। यही कारण है कि इन महाकाव्यों में नारी की भूमिका का विस्तृत और गहन वर्णन मिलता है, जो उस समय की समाज व्यवस्था और नारी के जीवन को समझने में सहायक सिद्ध होता है।

प्रस्तावना – संस्कृत साहित्य में महाकाव्य विधा का एक अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है, जो प्राचीन भारतीय समाज, संस्कृति, धार्मिक मान्यताओं और नैतिक आदर्शों को समेटे हुए है। बृहत्त्रयी महाकाव्य, जिसमें रामायण, महाभारत और श्रीमद्भगवद्गीता के अख्यान के भागों को शामिल किया गया है, भारतीय साहित्य का ऐसा त्रय है जो न केवल विशालकाय ग्रंथ हैं बल्कि यह मानव जीवन के सम्पूर्ण दर्शन को भी अभिव्यक्त करते हैं।

संस्कृत महाकाव्यों की समृद्ध परंपरा में किरातार्जुनीयम्, शिशुपालवाम् और नैषधीयचरितम् को विशेष स्थान प्राप्त है। ये तीनों महाकाव्य, जिन्हें बृहत्त्रयी के रूप में मान्यता दी गई है, भारतीय संस्कृति के उच्चतम आदर्शों और मूल्यों को प्रतिबिंबित करते हैं। इन महाकाव्यों में न केवल कथा-कला की उत्कृष्टता है, बल्कि इनकी रचना भारतीय समाज के विविा पहलुओं को भी उजागर करती है, जिसमें धर्म, नीति, और नैतिकता की परिपूर्ण अभिव्यक्ति मिलती है। भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण और विशिष्ट पहलू स्त्री है, जो सदैव से समाज की सांस्कृतिक,धार्मिक, और नैतिक संरचना का अभिन्न अंग रही है। यही कारण है कि इन महाकाव्यों में स्त्री की भूमिका का विस्तृत और गहन वर्णन मिलता है, जो उस समय की समाज व्यवस्था और स्त्री के जीवन को समझने में सहायक सिद्ध होता है।

नैषधीयचरितम् की कथा-वस्तु – नैषधा-चरित 22 सर्गो वाला एक विस्तृत महाकाव्य है, जिसके प्रत्येक सर्ग में सौ से अधिक पद्य हैं; केवल 13वें और 19वें सर्गो में क्रमशः 55 और 66 पद्य हैं। अन्य सभी सर्ग बड़े हैं, जिनमें कई में लगभग 150 पद्य हैं। इस विशालता को देखते हुए, श्रीहर्ष ने नल-दमयंती की कथा का संक्षिप्त अंश ही लिया है। उन्होंने दमयंती और नल के प्रेम, उनके विवाह और विवाह के बाद की क्रीड़ाओं का वर्णन कर इसे समाप्त किया है। नैषधीयचरितम् के एक प्रसंग में हंस, नल के रूप, शौर्य, और व्यक्तित्व का वर्णन इस प्रकार करता है कि दमयंती उसे सुनकर मुग्ध हो जाती हैं। वह बताता है कि नल एक आदर्श पुरुष हैं- तेजस्वी, साहसी, और सौम्य स्वभाव वाले। वह विद्वानों का सम्मान करने वाले, प्रजा के प्रति संवेदनशील और पराक्रमी योद्धा हैं।

अमितं मधु तत्कथा मम श्रवणप्राघुणकीकृता जनैः।
मदनानलबोधने भवेत् खग! धाय्या धिगधैर्यधारिणः।।[1]

हंस की बातों से दमयंती के मन में नल के प्रति प्रेम का अंकुर फूटने लगता है। नल के रूप, गुण, और उनकी कीर्ति से प्रभावित होकर दमयंती का हृदय उनके प्रति आकृष्ट हो उठता है।

हंस दमयंती से कहता है,'हे सुंदरी, निषधा देश के राजा नल ऐसे तेजस्वी और रूपवान हैं कि उनके सामने किसी अन्य की तुलना नहीं की जा सकती। वे न केवल पराक्रमी योद्धा हैं, बल्कि उनके हृदय में कोमलता और करुणा का निवास है। उनका व्यक्तित्व ऐसा है कि केवल एक बार उनके दर्शन से ही हर किसी का हृदय उनसे प्रेम करने लगता है।'

अहो तपः कल्पतरूर्नलीयस्त्वत्पाणिजाग्रस्फुरदङ्.ङ्करश्रीः।
त्वद्भ्रूयुगं यस्य खलु द्विपत्री तवाधरो रज्यति यत्कलम्बः।।[2]

हंस की वाणी और नल के रूप, गुणों का वर्णन सुनकर दमयंती का हृदय नल के प्रति आकृष्ट हो जाता है। हंस का प्रत्येक शब्द नल के प्रति उनके प्रेम की भावना को और अधिक प्रबल करता है। दमयंती मन ही मन नल के दर्शन की अभिलाषा करने लगती हैं, और उनके प्रति अनुरक्त हो उठती हैं।

दमयंती की इस दुखद स्थिति की सूचना उसके पिता महाराज भीम को मिलती है, जो तुरंत अपने प्रमुख मंत्रियों और राज्य के वैद्य के साथ उसकी स्थिति को देखने अंतःपुर पहुँचते हैं। राजकुमारी की यह स्थिति देखकर महाराज भीम का हृदय द्रवित हो उठता है। वे अपनी पुत्री की पीड़ा को समझते हुए उसे स्वयंवर का आश्वासन देते हैं, ताकि वह अपने प्रिय नल से मिल सके और उसकी विरह-जन्य वेदना समाप्त हो। महाराज भीम सखियों को दमयंती के उपचार और देखभाल का निर्देश देकर वहाँ से लौट जाते हैं।

हृदयदत्तसरोरुहया तया क्व सदृगस्तु वियोगनिमग्नया।
प्रियधनुः परिरभ्य हृदा रतिः किमनुमर्तुमशेत चितार्चिषि।।[3]

जब दमयन्ती ने प्रियतम के वियोग के कारण पीड़ा से सन्तप्त होकर अपनी छाती पर कमल रख लिया था, उस समय ऐसी कौन नारी थी जो

उसकी समानता कर सकती? क्या वह रति थी, जो अपने पति कामदेव के पीछे जाने (सहमरण) के लिए उसके (कुसुम) धानुष को छाती पर रखकर उसकी चिता की अग्नि में जा पड़ी थी?।

कुछ विद्धानों के अनुसार, मूल नैषध में 100 सर्ग थे, जिनमें से केवल 22 ही प्राप्त हैं। एक किंवदंती के अनुसार, जब श्रीहर्ष ने अपनी पाण्डुलिपि काव्यशास्त्र के मर्मज्ञ आचार्य मम्मट को दिखाई, तो उन्होंने इसमें कई दोष बताए। इससे आहत होकर श्रीहर्ष ने इसे गंगा में बहा दिया। बाद में उनके शिष्यों ने गंगा की धारा से 22 सर्ग ढूँढ़ निकाले; बाकी सर्ग नहीं मिल सके। इस किंवदंती का कोई ठोस प्रमाण नहीं होने के कारण कुछ विद्धानों ने इसे अस्वीकार किया है।

किरातार्जुनीयम् की कथा-वस्तु – लक्षण ग्रंथों में किसी भी महाकाव्य के निर्माण के लिए एक प्रख्यात और प्रभावशाली कथा-वस्तु का चयन आवश्यक माना गया है, ताकि उस कथा के मायम से साहित्यिक उत्कृष्टता और गहन दार्शनिक दृष्टि की अभिव्यक्ति हो सके। बृहत्त्रयी के रचयिताओं ने इस सिद्धांत का अनुसरण किया और महाकाल की प्रतिष्ठा का पालन करने के लिए उन्होंने महाभारत से प्रेरणा प्राप्त की। महाकाव्य किरातार्जुनीय इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसकी कथा महाभारत के वनपर्व के 27वें से 41वें अयाय तक में वर्णित है।

महाभारत में वर्णित यह कथा मूलत: सरल और कथ्य में नीरस प्रतीत हो सकती है, जिसमें अर्जुन का किरात (शिव) के साथ युद्ध होता है और दिव्यास्त्र की प्राप्ति होती है। परंतु कवि भारवि ने अपनी रचनात्मक कुशलता और साहित्यिक प्रतिभा से इस कथा को गहन अर्थ और सौंदर्य प्रदान कर दिया है। भारवि के किरातार्जुनीयम् में अर्जुन और किरातवेशधारी शिव के संवाद, युद्ध और अर्जुन की तपस्या का अत्यंत संवेदनशील और कलात्मक वर्णन मिलता है, जो पाठक को बोध और रमणीयता दोनों प्रदान करता है। इस महाकाव्य का नाम किरातार्जुनीय अर्जुन और शिव के बीच की कथा पर आधारित है, जहाँ अर्जुन अपनी वीरता और साधना के बल पर शिव से दिव्यास्त्र प्राप्त करता है। 'किरात' का अर्थ है पर्वतीय या वनवासी रूप में भगवान शिव, जो अर्जुन के धैर्य, साहस और साधना की परीक्षा लेने के लिए स्वयं किरातवेश में आते हैं। 'अर्जुनीय' का तात्पर्य अर्जुन से है, जिनकी अद्धितीय पराक्रम और तप का वर्णन इस महाकाव्य का मुख्य विषय है। इसकी व्युत्पत्ति इस प्रकार है –

किरातश्च अर्जुनश्च किरातार्जनौ, तौ अधिकृत्यं कृतं काव्यम् किरातार्जुनीयम्।[4]

यहां किरातार्जुन समस्त पद से 'छ' प्रत्यय होता है और 'छ' को 'ईय' आदेश होकर 'किरातार्जुनीय' रूप बनता है। इस प्रकार, भारवि ने न केवल महाभारत की कथा को अपनाया, बल्कि उसे एक उत्कृष्ट महाकाव्य के रूप में विकसित कर दिया, जो भारतीय साहित्य और काव्य-परंपरा में अद्धितीय स्थान रखता है।

महाकवि भारवि द्धारा रचित संस्कृत साहित्य का प्रख्यात महाकाव्य 'किरातार्जुनीयम्'भारतीय महाकाव्यों में एक विशिष्ट स्थान रखता है। यह महाकाव्य महाभारत के एक प्रमुख प्रसंग पर आधारित है, जिसमें अर्जुन अपनी शक्ति का संचित करना और दिव्यास्त्रों की प्राप्ति हेतु कठोर तपस्या करता है। अर्जुन की तपस्या में इन्द्र और शिव को प्रसन्न करने का महत्वपूर्ण वर्णन किया गया है, जिसे महाकवि ने गहन काव्यात्मक भाषा और शिल्प में 18 सर्गों में विस्तृत रूप से चित्रित किया है। यह महाकाव्य अपने गूढ़ विचारों, अद्धितीय शब्द-संरचना और नैतिक प्रश्नों के लिए संस्कृत साहित्य में अत्यंत प्रतिष्ठित है। संस्कृत साहित्य में जिन पाँच महाकाव्यों की विशेष प्रतिष्ठा है, उनमें 'किरातार्जुनीयम्' का नाम भी सम्मिलित है।

भगवान व्यास अर्जुन को शिव की आराधाना करने की योगविधि विस्तार से समझाते हैं और फिर अर्जुन के सामने ही अचानक से अंतर्धान हो जाते हैं। व्यास जी की यह उपस्थिति, उनका निर्देश और अंतर्धन अर्जुन के मन में एक दृढ़ संकल्प उत्पन्न करता है। वह शिव की आराधना के लिए तत्पर हो जाते हैं, और उनके मार्गदर्शक के रूप में यक्ष उपस्थित होते हैं।

तदाशु कुर्वन्वचनं महर्षेर्मनोरथान्ना: सफलीकुरूष्व।
प्रत्यागतं त्वाऽस्मि कृतार्थमेव स्तनोपपीडं परिरब्धुकामा।।[5]

भगवान वेदव्यास के दिए गए आदेश के तुरंत बाद अर्जुन उनकी आज्ञा का पालन करते हुए शिव की आराधना का दृढ़ निश्चय करते हैं। द्रौपदी अर्जुन को इस तपस्या में जाते हुए देखती हैं और उनके प्रति अपने प्रेम, विश्वास और चिंता को व्यक्त करती हैं। वह अर्जुन से विनम्रतापूर्वक आग्रह करती हैं कि वे महर्षि वेदव्यास के मार्गदर्शन का पालन करते हुए उनकी इच्छाओं को पूरी करें, और इस कठिन तपस्या से अपने सभी मनोबल और आत्मविश्वास को बनाए रखें।

स्पष्टत: इस महाकाव्य में प्रकृति वर्णन, क्रीडादि-वर्णन एवं युद्ध-वर्णन के द्धारा मुख्य कथानक, (कथा का) विस्तार किया गया है। इस महाकाव्य का आरंभ 'श्रिय:'शब्द से होता है। प्रत्येक सर्ग के अंतिम पद्य में 'लक्ष्मी' शब्द भी प्रयुक्त है। इस प्रकार मांगलिक शब्द का आदि मध्यावसान में प्रयोग करके महाकाव्य को मंगलमय बनाया है। कलावादी चित्रों तथा रमणीय वर्णनों से इसे भरकर नवीन दिशा का प्रवर्तन किया है। श्रृंगार चेष्टाओं के वर्णनों काव्य की चित्रात्मकता इसमें इन्होंने भरी है। चतुर्थ में एकादश सर्ग तक के अंतराल को ऐसे ही वर्णनों द्धारा भरा गया है। युद्ध का लंबा वर्णन भी महाकाव्य की विशालता को भले ही रेखांकित करे, उसमें कविता की आत्मा तिरोहित हो गई है। इस महाकाव्य के नायक अर्जुन धीरोदात्त कोटि के हैं। वीर रस प्रमुख है, श्रृंगार रस अङ्ग के रूप में है। इस महाकाव्य पर मल्लिनाथ ने टीका लिखी है, 15वें सर्ग पर दुर्विनीत ने भारवि के काल में ही टीका लिखी थी। माघ ने इस काव्य की सभी विशिष्टताओं का अनुसरण करके 'शिशुपालवध' की रचना की। इस महाकाव्य के प्रथम तीन सर्ग बहुत लोकप्रिय हैं। इन तीनों सर्गों को 'पाषाणत्रय' की संज्ञा दी गई है। इनमें मुख्य रूप से भारवि का राजनीति ज्ञान प्रकट हुआ है।

शिशुपालवधम् की कथा-वस्तु – कविवर माघ ने अपने महाकाव्य शिशुपाल-वध की कथावस्तु को मुख्यत: महाभारत, श्रीमद्भागवत, और अन्य पुराणों के आधार पर निर्मित किया है, जिससे यह महाकाव्य भारतीय पौराणिक साहित्य के समृद्ध कथानकों से गहरे रूप से जुड़ जाता है। शिशुपाल-वध का केंद्रीय विषय भगवान श्रीकृष्ण द्धारा चेदि नरेश शिशुपाल का वध है, जिसमें माघ ने श्रीकृष्ण की दिव्यता और शक्ति को विस्तृत रूप में प्रस्तुत किया है। माघ ने इस महाकाव्य में अपनी काव्य कला और कल्पनाशीलता का समावेश कर इसे संस्कृत साहित्य की उत्कृष्ट रचनाओं में शामिल किया है, और साथ ही उन्होंने शास्त्रों में वर्णित विभिन्न घटनाओं और पात्रों का भी उल्लेख करके इसका कथानक व्यापक और प्रभावशाली बनाया है।

माघ की यह रचना धार्मिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यधिक मूल्यवान है, क्योंकि इसमें उन्होंने विभिन्न पौराणिक कथाओं को

एक सूत्र में पिरोया है। उनके इस काव्य में भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति, उनकी दिव्यता और शिशुपाल के अहंकार का मर्मस्पर्शी चित्रण मिलता है, जो पाठकों को धार्म, न्याय, और सत्य की ओर प्रेरित करता है। माघ का यह महाकाव्य उनकी गहरी पांडित्यपूर्ण दृष्टि और काव्य रचना की बेजोड़ शैली का प्रतीक है, जिससे शिशुपाल-वधा संस्कृत साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

सर्वप्रथम श्रीकृष्ण ने अपनी समस्या को व्यक्त किया। शिशुपाल का वध करना आवश्यक है, किंतु इसी समय युधिष्ठिर के 'राजसूय' यज्ञ में शामिल होने के लिये युधिष्ठिर का निमंत्रण भी मिला है। इन दोनों आवश्यक कार्यों में से पहले किस कार्य को करना चाहिये। श्रीकृष्ण का वचन सुनकर बलराम बोले- 'अपनी उन्नति और शत्रु का नाश- ये दोनों ही नीति की बातें हैं।'[6]

अंत में यही निश्चय हुआ कि युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में सम्मिलित होना ही उचित है।

यजतां पाण्डव: स्वर्गभवत्विन्द्रास्तपत्विन:।
वयं हनाम द्विषत: सर्व: स्वार्थ समीहते।।[7]

उद्धव के विचार सुन लेने के बाद युद्ध का आग्रह समाप्त हो जाने के कारण श्रीकृष्ण ने इन्द्रप्रस्थ की ओर प्रस्थान किया।

श्रीकृष्ण का ध्यान आकर्षित करते हुये दारुक श्री कृष्ण से कहता है कि इस पर्वत पर 'यह निश्चित रूप से सूर्य है।' यहाँ बहुमूल्य रत्नों की खानें हैं। जहां एक और यह पर्वतीय प्रदेश भोग भूमि है, वहीं दूसरी ओर समाधि लगाये हुये सिद्ध पुरुषों का निवास स्थान होने से यह सिद्ध भूमि भी है।

उदयति विततोर्ध्वरश्मिरज्जावहिमरुचौ - हिमधाम्नि याति चास्तम्।
वहति गिरिरयं विलम्बिघण्टाद्वयपरिवारितवारणे न्द्रलीलाम्।।[8]

सूतपुत्र दारुक की रैवतक - पर्वत के मनोरम प्राकृतिक सौंदर्य की बातें सुनने के अन्तर भगवान श्रीकृष्ण ने रैवतक पर्वत पर कुछ समय तक रुक कर निवास करने की इच्छा की। कुछ नृपतियों ने श्रीकृष्ण के समीप ही अपने शिविरों को स्थापित कर लिया था। परिजनों द्वारा वाहनों से नीचे उतारी जाने वाली रानियों की मुख- श्री को, जिनके घूंघट का वस्त्र नीचे उतरे समय किंचित हट गया था, लोग भय मिश्रित कौतुहल के साथ देख रहे थे। जब तक सैनिक उतर रहे थे, तब तक वणिकजन दोनों और तम्बू फैलाकर बिक्री की वस्तुओं से भरी-पूरी दुकानों को सजा रहे थे।

भागवत कथा के अतिरिक्त, माघ ने अन्य पुराणों के अंशों को भी अपने महाकाव्य में सम्मिलित किया है। उदाहरण के लिए, शिशुपाल-वध के प्रथम सर्ग में शिशुपाल के दो पूर्व जन्मों का उल्लेख किया गया है, जो विष्णु पुराण के आधार पर वर्णित है। इस प्रसंग में यह बताया गया है कि शिशुपाल का पूर्वजन्म में कौन सा अस्तित्व था और कैसे उनके कर्मों का प्रभाव उनके वर्तमान जन्म पर पड़ा। माघ ने इस संदर्भ को न केवल कथानक की दृष्टि से महत्वपूर्ण बनाया है, बल्कि इससे यह भी स्पष्ट होता है कि उन्होंने अपने काव्य में पौराणिक स्रोतों का सूक्ष्म अध्ययन करके उनके विवरणों को रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है। माघ ने इस महाकाव्य को 20 सर्ग में विभक्त किया है।

उपसंहार - बृहत्त्रयी में नैषधीयचरितम्, किरातार्जुनीयम् और शिशुपालवधम् संस्कृत साहित्य के महत्वपूर्ण महाकाव्य हैं, जिनकी कथाएँ विशिष्ट साहित्यिक और दार्शनिक मूल्यों से समृद्ध हैं। महाकवि श्रीहर्ष द्वारा रचित नैषधीयचरितम् नल और दमयंती की प्रेमकथा पर आधारित है, जिसमें नल के राज्यच्युत होने, जंगलों में भटकने और अंतत: अपने राज्य और दमयंती को पुन: प्राप्त करने की संघर्ष-गाथा है। इसी प्रकार, महाकवि भारवि का किरातार्जुनीयम् अर्जुन और भगवान शिव के बीच हुए संघर्ष को दर्शाता है, जहाँ अर्जुन की तपस्या और भक्ति की परीक्षा के रूप में शिव किरात रूप में प्रकट होते हैं और अंतत: पाशुपत अस्त्र प्रदान करते हैं। यह महाकाव्य अर्जुन के धैर्य, वीरता और आत्मशक्ति को उजागर करता है। वहीं, माघ का शिशुपालवधम् श्रीकृष्ण द्वारा अहंकारी शिशुपाल के वध की कथा को अलंकारिक और शास्त्रीय शैली में प्रस्तुत करता है, जिसमें शिशुपाल का क्रोधा और श्रीकृष्ण की धैर्यपूर्ण प्रतिक्रिया का सुंदर चित्रण किया गया है। इन महाकाव्यों की साहित्यिक उत्कृष्टता, गहन भावनात्मक संवेदनाएँ और दार्शनिक संदेश संस्कृत काव्य को विशिष्टता प्रदान करते हैं, जिससे ये न केवल कथात्मक बल्कि सांस्कृतिक और नैतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण बनते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. तिवारी, डॉ. श्यामलेश कुमार (2017), 'नैषधीयचरितम', चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, सर्ग 2/55
2. तिवारी, डॉ. श्यामलेश कुमार (2017), 'नैषधीयचरितम', चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, सर्ग 3/120
3. तिवारी, डॉ. श्यामलेश कुमार (2017), 'नैषधीयचरितम', चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, सर्ग 4/21
4. महाभारत-वनपर्व-नलोपख्यान पर्व, अध्याय 53-57
5. मालवीय, डॉ. सुधाकर, (2019), 'किरातार्जुनीयम', चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, सर्ग 3/54
6. शास्त्री, हरगोविन्द (पं.) (2015)। शिशुपालवधम् हर्ष, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी श्लोक सर्ग 2/33
7. शास्त्री, हरगोविन्द (पं.) (2015)। शिशुपालवधम् हर्ष, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी श्लोक सर्ग 2/65
8. शास्त्री, हरगोविन्द (पं.) (2015)। शिशुपालवधम् हर्ष, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी श्लोक सर्ग 4/20

****